एकलव्य

ओ हरियल पेड़...
O Flowering Tree...

एक ओड़िया लोककथा
An Oriya Folktale

ओ हरियल पेड़...

O Flowering Tree...

चित्रांकनः रानू टाइटस
Illustrations: Ranu Titus

एकलव्य का प्रकाशन

ओ हरियल पेड़... एक ओड़िया लोककथा

O FLOWERING TREE... AN ORIYA FOLKTALE

चित्रांकन: रानू टाइटस/Illustrations: Ranu Titus

पहला संस्करण: मई 2007/5,000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रण: अक्तूबर 2008/15,000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण: नवम्बर 2008/30,000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रण: नवम्बर 2008/30,000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2008/60,000 प्रतियाँ
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2008/20,000 प्रतियाँ
छठवाँ पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2009/23,000 प्रतियाँ
सातवाँ पुनर्मुद्रण: जनवरी 2010/20,000 प्रतियाँ
आठवाँ पुनर्मुद्रण: जनवरी 2010/20,000 प्रतियाँ
पराग इनिशिएटिव सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 130 gsm आर्टकार्ड (कवर)
ISBN: 978-81-89976-01-9
मूल्य: 22.00 रुपए

प्रकाशक: **एकलव्य**
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्स: (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीय: books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

मुद्रक: आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोन: (0755) 2687 589

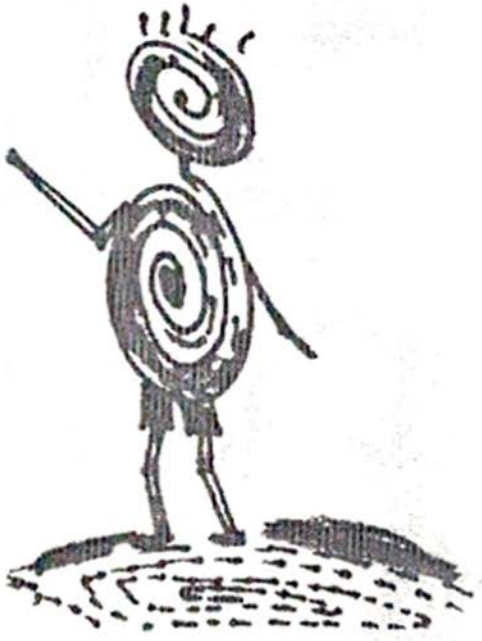

लोकगीत और कथाएँ उस समय की स्मृति को बचाकर रखने में हमारी मदद करते हैं जब बच्चों और बड़ों के साहित्य में कोई अन्तर नहीं होता था। यह मात्र संयोग नहीं है कि पिछले कुछ समय से हिन्दी भाषा से ऐसे प्रकाशन का लोप होता जा रहा है।

छोटे बच्चों के लिए ऐसे गीत और कहानियाँ जिनमें सवाल-जवाब और दोहराव की शैली अपनाई गई हो, बहुत रुचिकर होती हैं। शायद यह बात वयस्कों के लिए भी सही है - लेकिन बच्चों के लिए दोहराव और पुनरावृत्ति ढाढ़स बँधाने की भूमिका भी अदा करते हैं। आसपास की दुनिया में कुछ परिचित और आत्मीय संकेत रहें, यह बच्चों के लिए बहुत ज़रूरी है।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी के नैरन्तर्य से बनी ये कथाएँ बच रहें, इस मंशा से यह लोक-कथा हम प्रकाशित कर रहे हैं। ***ओ हरियल पेड़...*** नाम से यहाँ प्रस्तुत ओड़िया लोकगीत को हमने सुविख्यात लेखक ए.के. रामानुजन द्वारा सम्पादित पुस्तक *Folktales From India* से प्राप्त किया है। इस किताब का हिन्दी अनुवाद कैलाश कबीर ने किया है जो नेशलन बुक ट्रस्ट से 2001 में ***भारत की लोक कथाएँ*** नाम से छपा था। रामानुजन ने लिखा है कि किसी कथा के अन्त में लोगों को यह ओड़िया गीत गाते हुए उन्होंने सुना था। उन्होंने इसे "जब कथा सम्पूर्ण होती है" शीर्षक से संकलित किया है।

रानू टाइटस के बनाए चित्रों की शैली भी इस कहानी के स्वभाव से प्रेरित है। चेहरे और भाव-भंगिमा इत्यादि में किए गए प्रयोग पर बच्चे ज़रूर बातचीत करना चाहेंगे। इस कहानी की तर्ज़ पर बच्चे अपनी-अपनी कहानी भी सुना या लिख सकते हैं। इसी तरह चित्रों को देखकर अपने आप कुछ प्रयोग करके चित्र भी बना सकते हैं - गोल, तिकोनी, आढ़ी और तिरछी रेखाओं से छेड़छाड़ करते हुए मज़ेदार चित्र।

- तेजी ग्रोवर

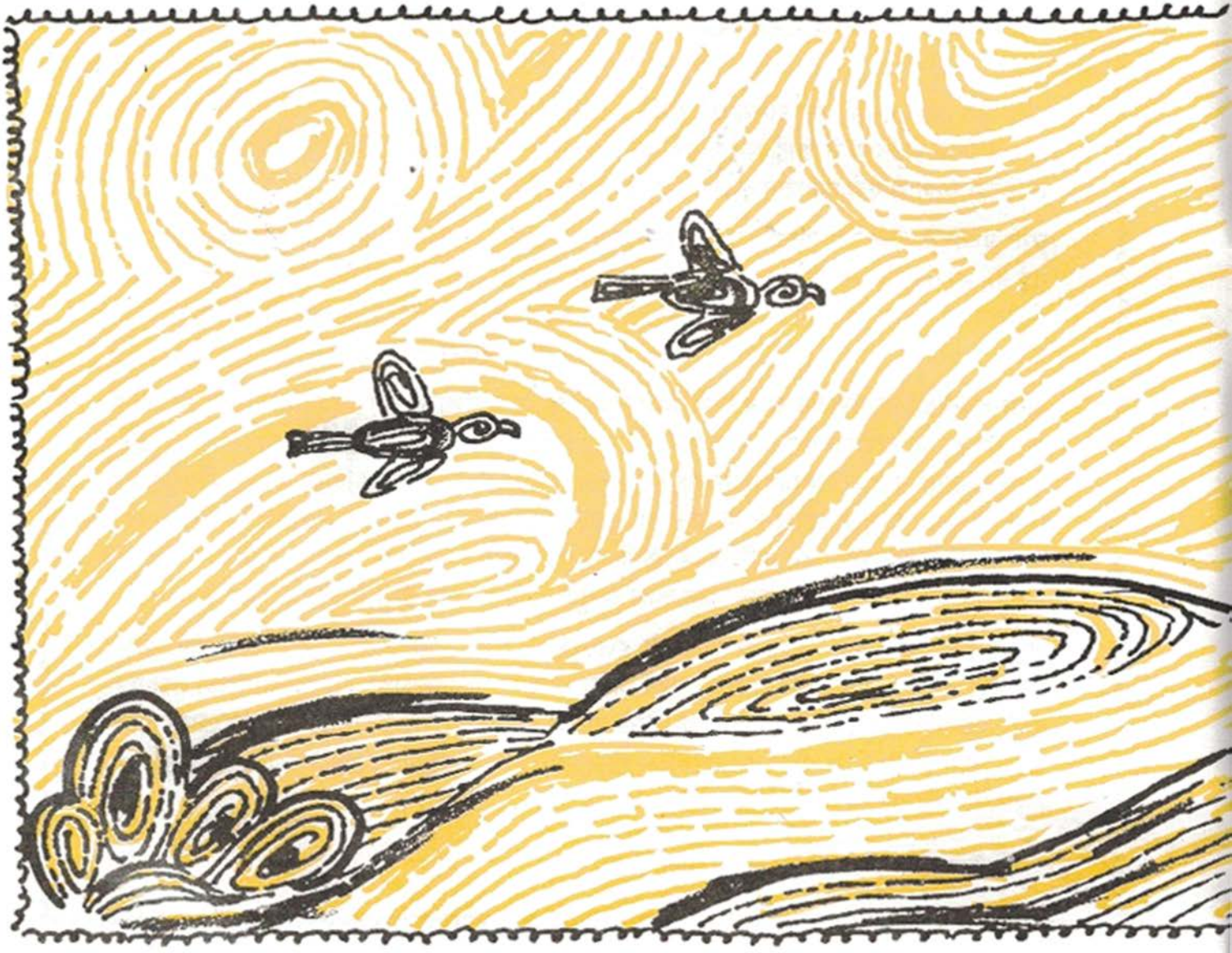

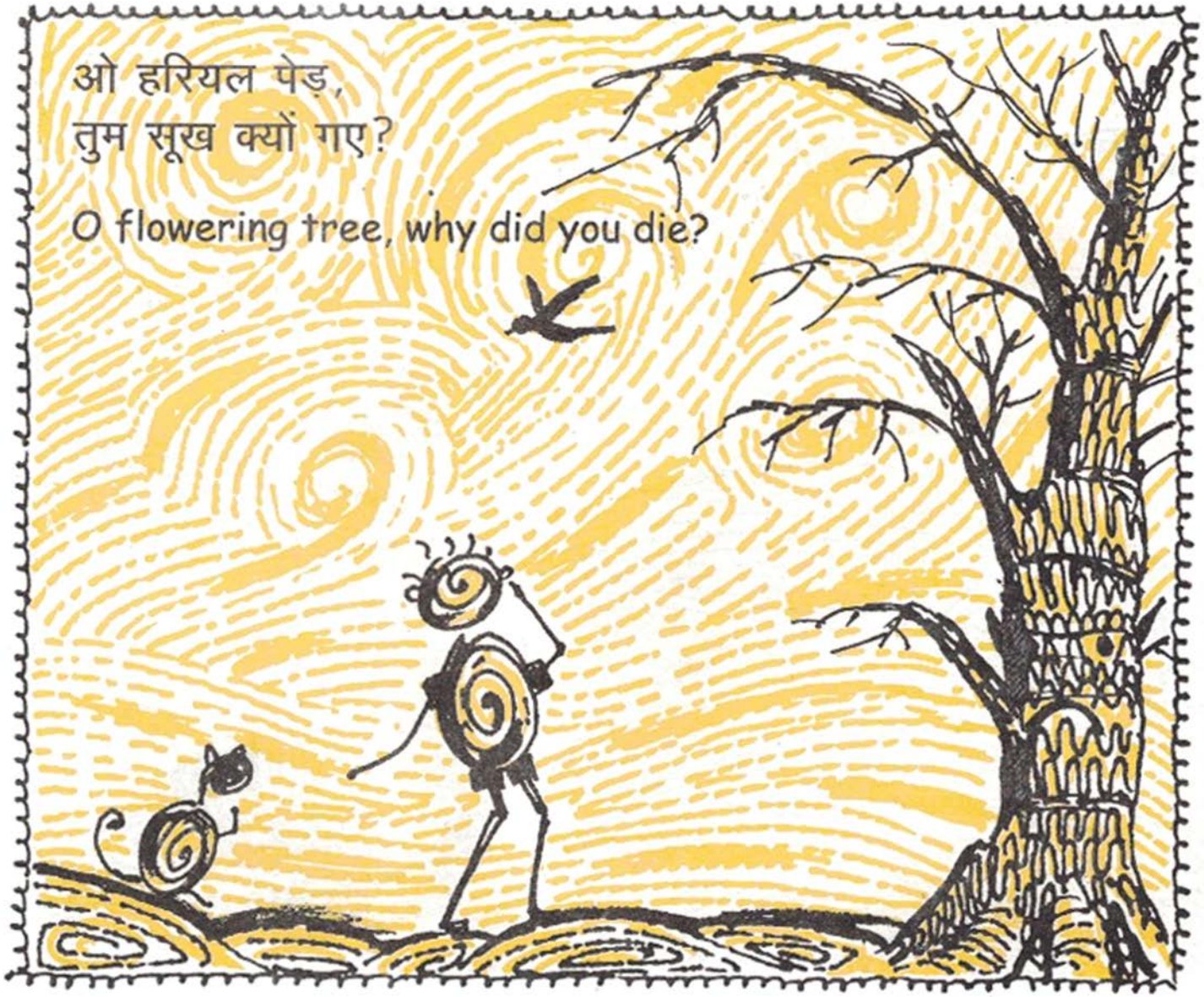
ओ हरियल पेड़,
तुम सूख क्यों गए?
O flowering tree, why did you die?

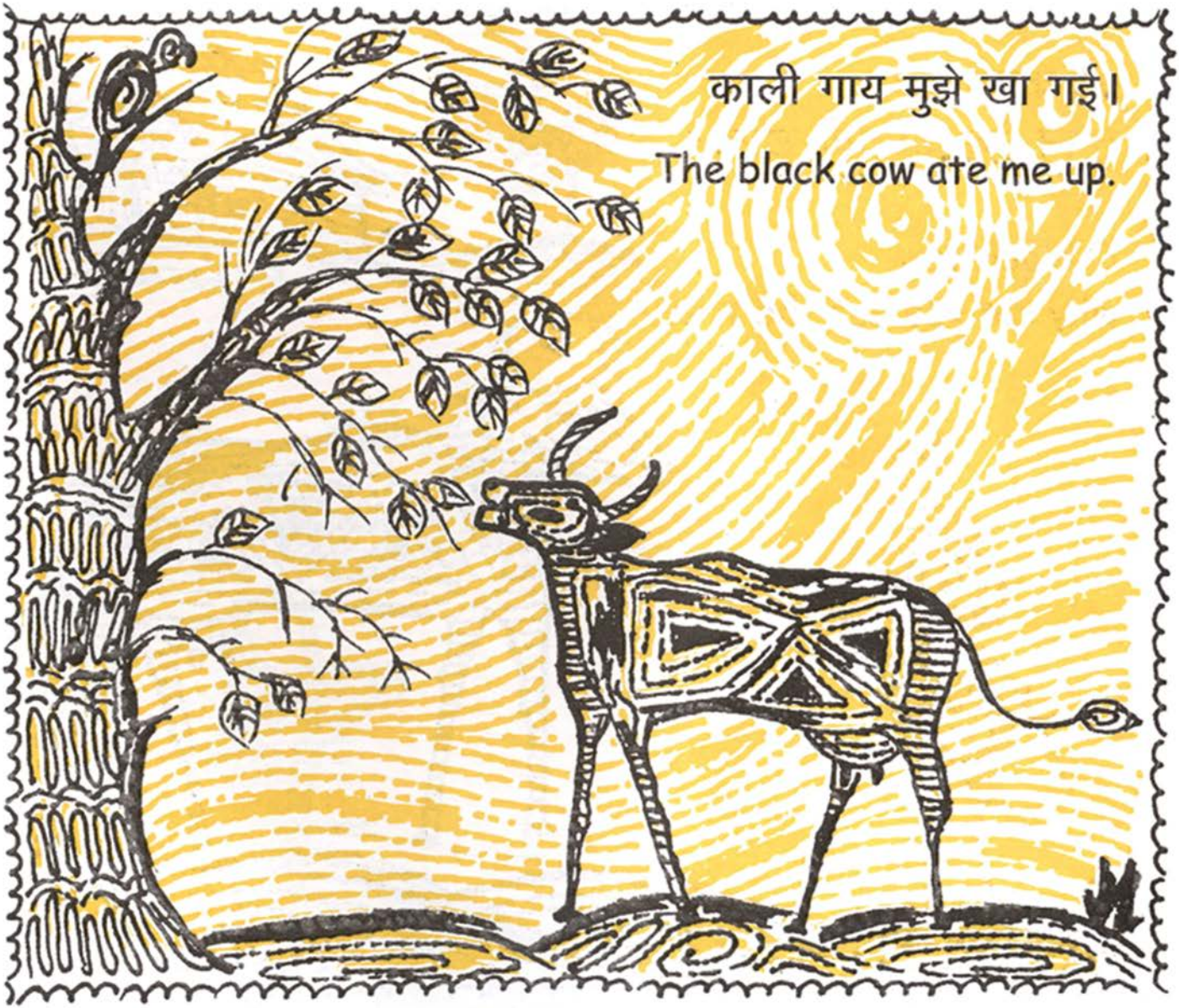
काली गाय मुझे खा गई।
The black cow ate me up.

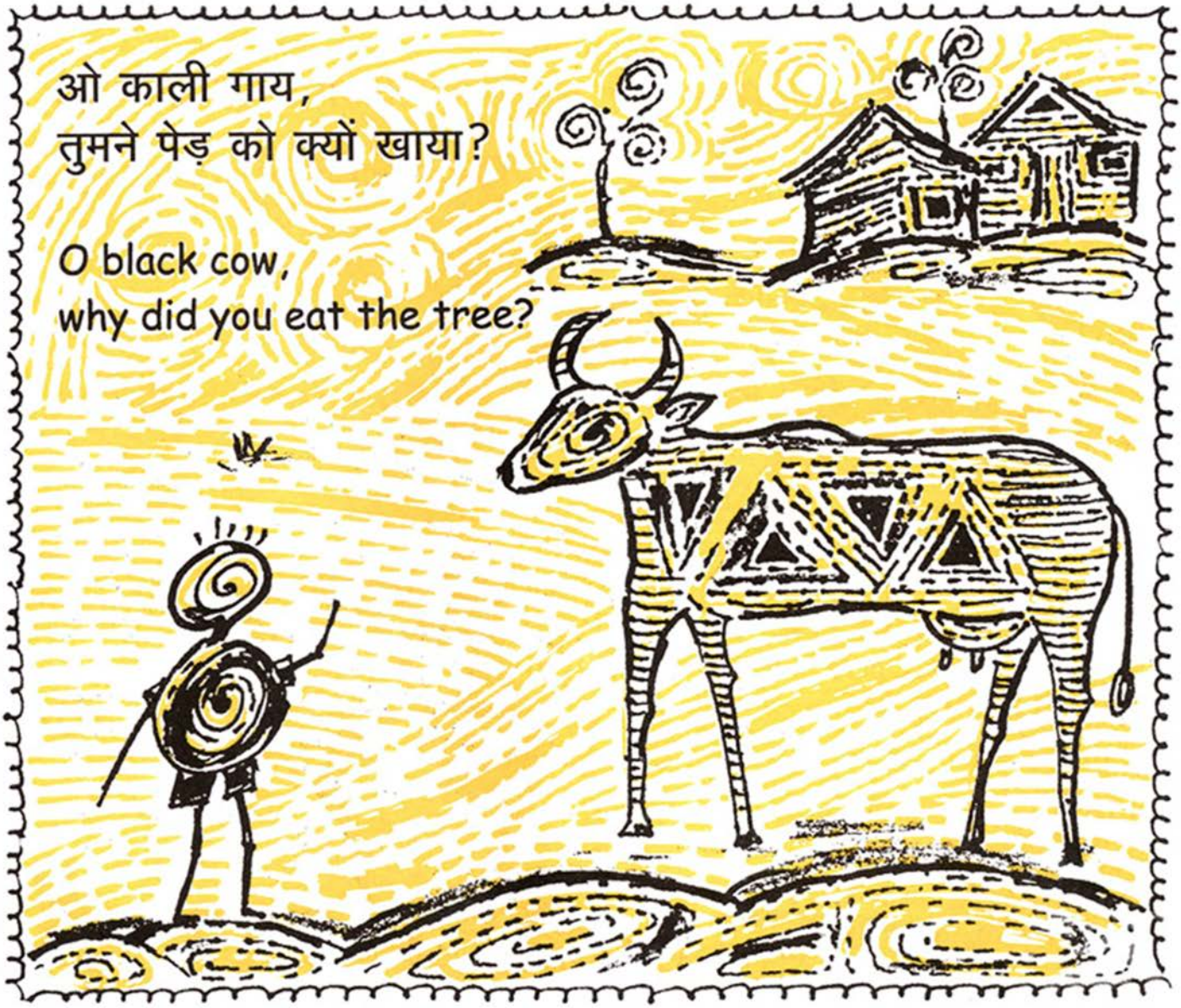

ओ काली गाय,
तुमने पेड़ को क्यों खाया?

O black cow,
why did you eat the tree?

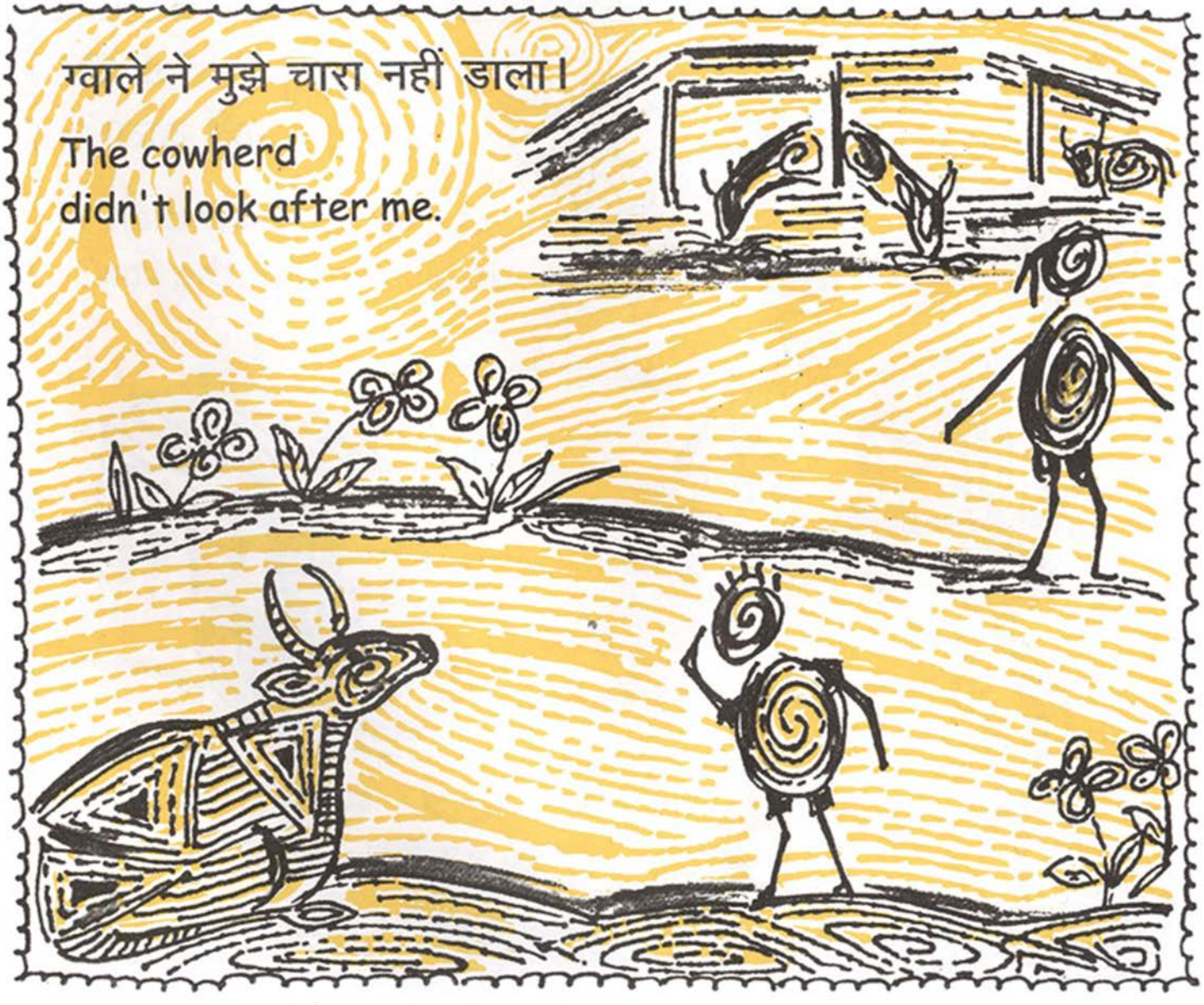
ग्वाले ने मुझे चारा नहीं डाला।
The cowherd
didn't look after me.

ओ ग्वाले, तुमने गाय को
चारा क्यों नहीं डाला?
O cowherd, why didn't
you look after the cow?

बहू ने मुझे खाना नहीं खिलाया।
The daughter-in-law,
didn't give me food.

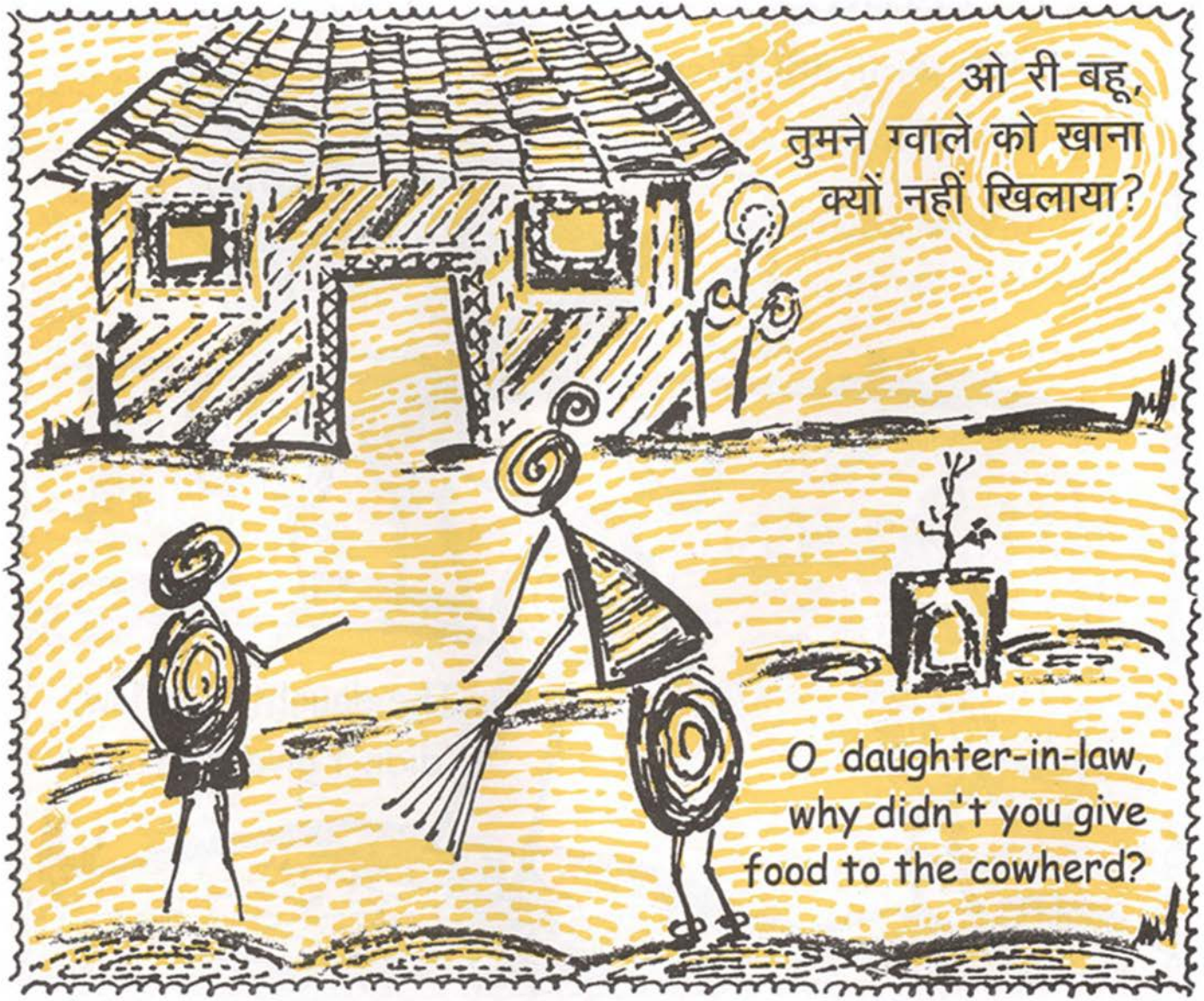
ओ री बहू,
तुमने ग्वाले को खाना
क्यों नहीं खिलाया?
O daughter-in-law,
why didn't you give
food to the cowherd?

मेरा मुन्ना रो रहा था।
My little baby was crying.

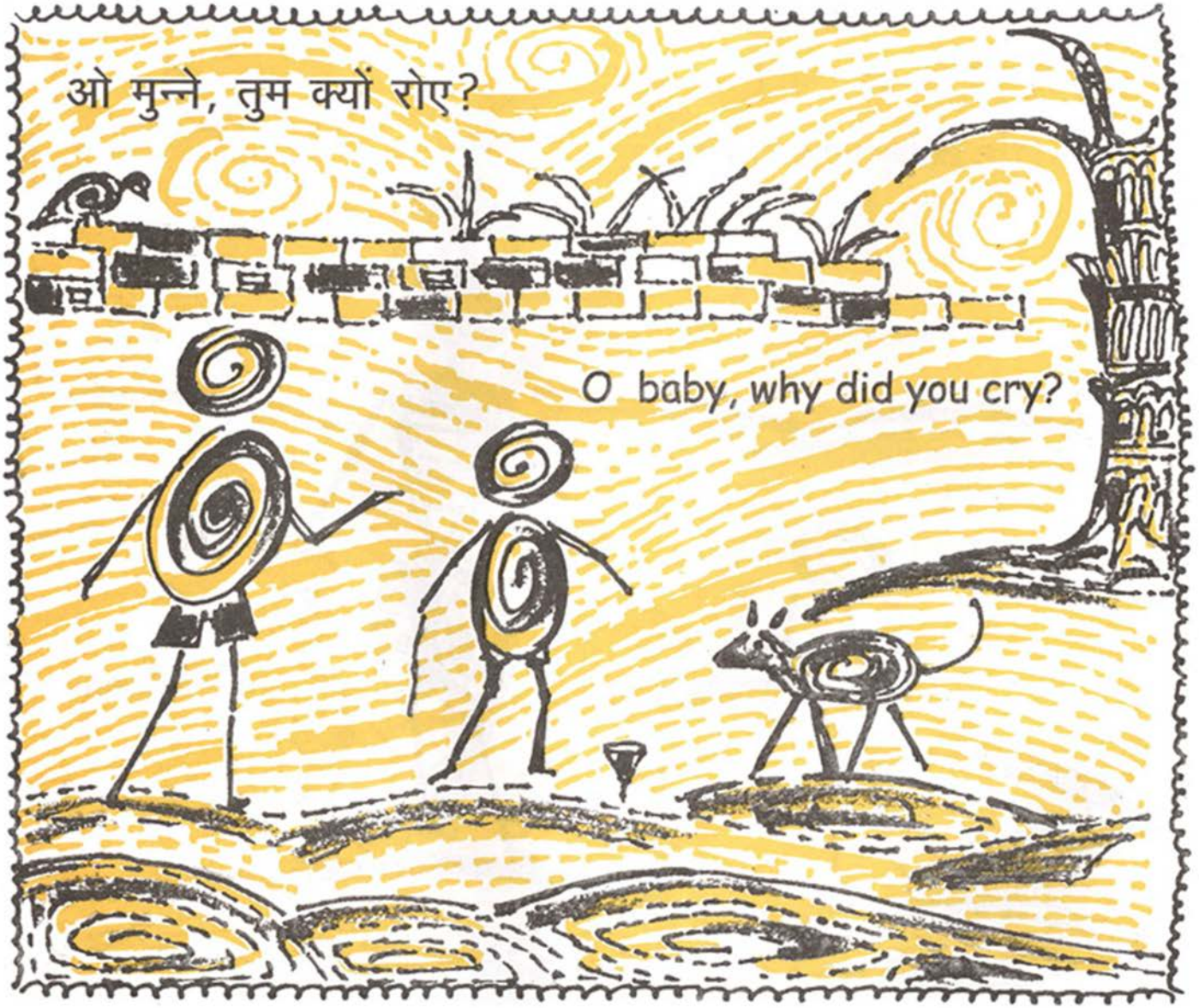
ओ मुन्ने, तुम क्यों रोए?
O baby, why did you cry?

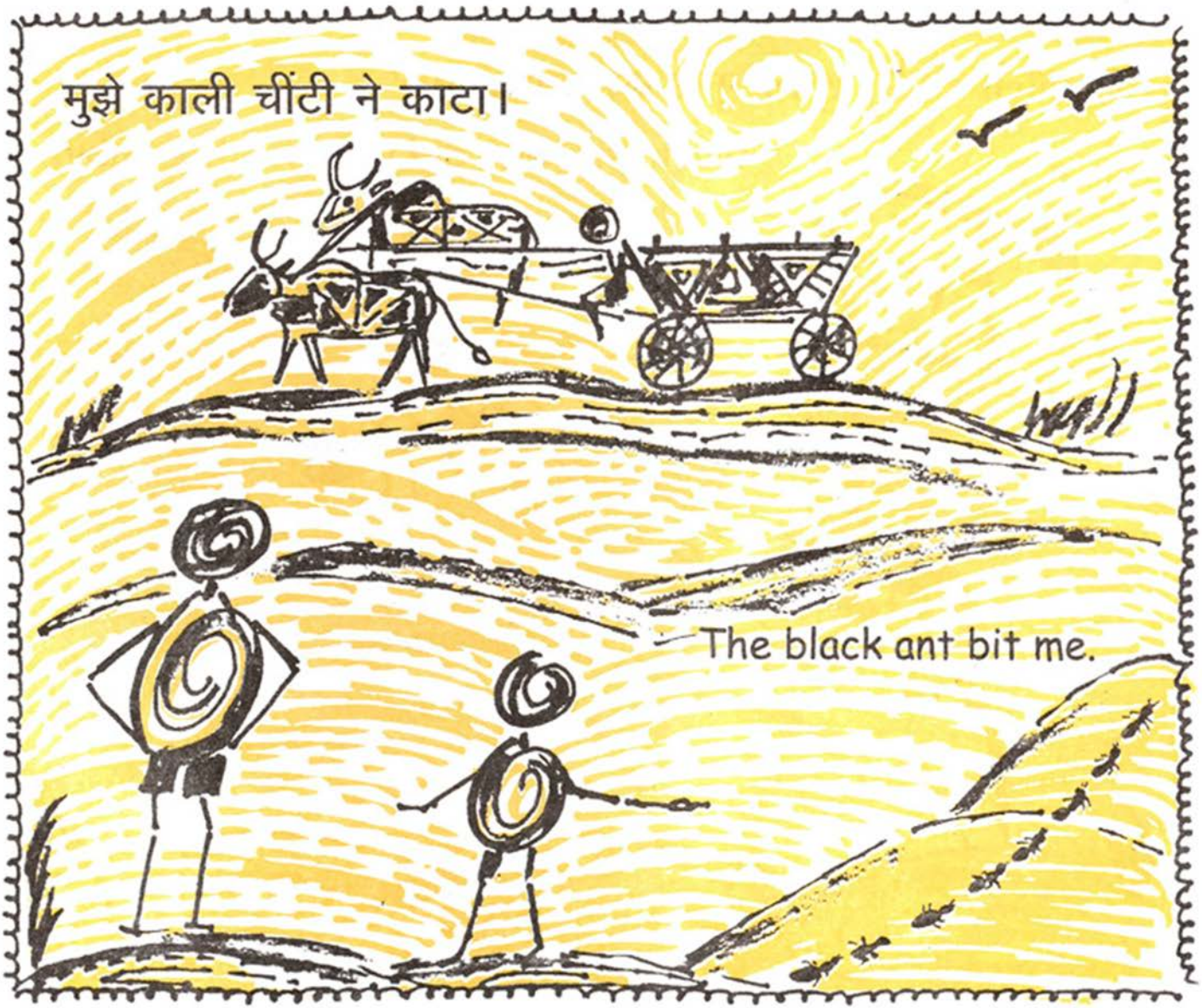
मुझे काली चींटी ने काटा।
The black ant bit me.

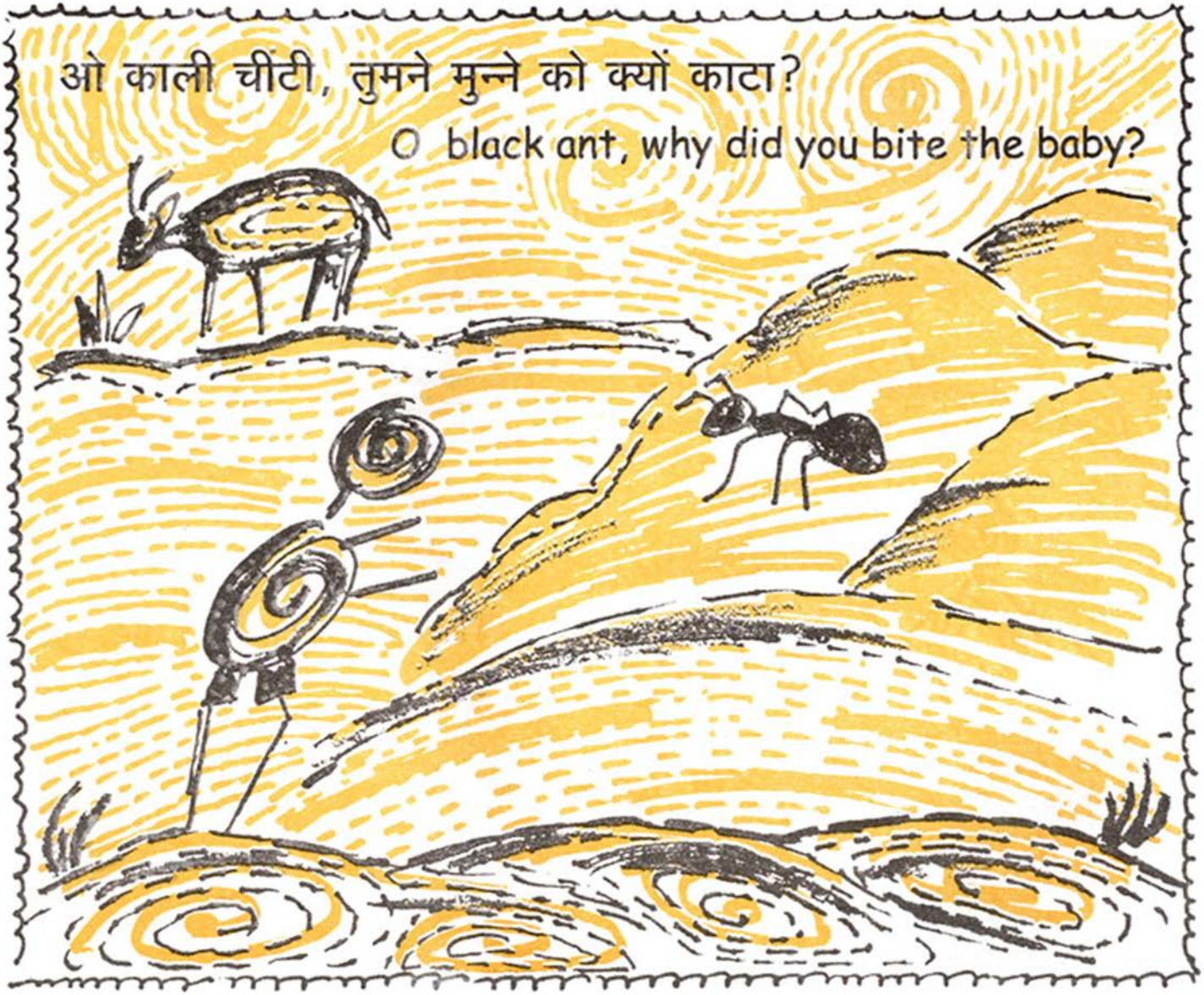
ओ काली चींटी, तुमने मुन्ने को क्यों काटा?
O black ant, why did you bite the baby?

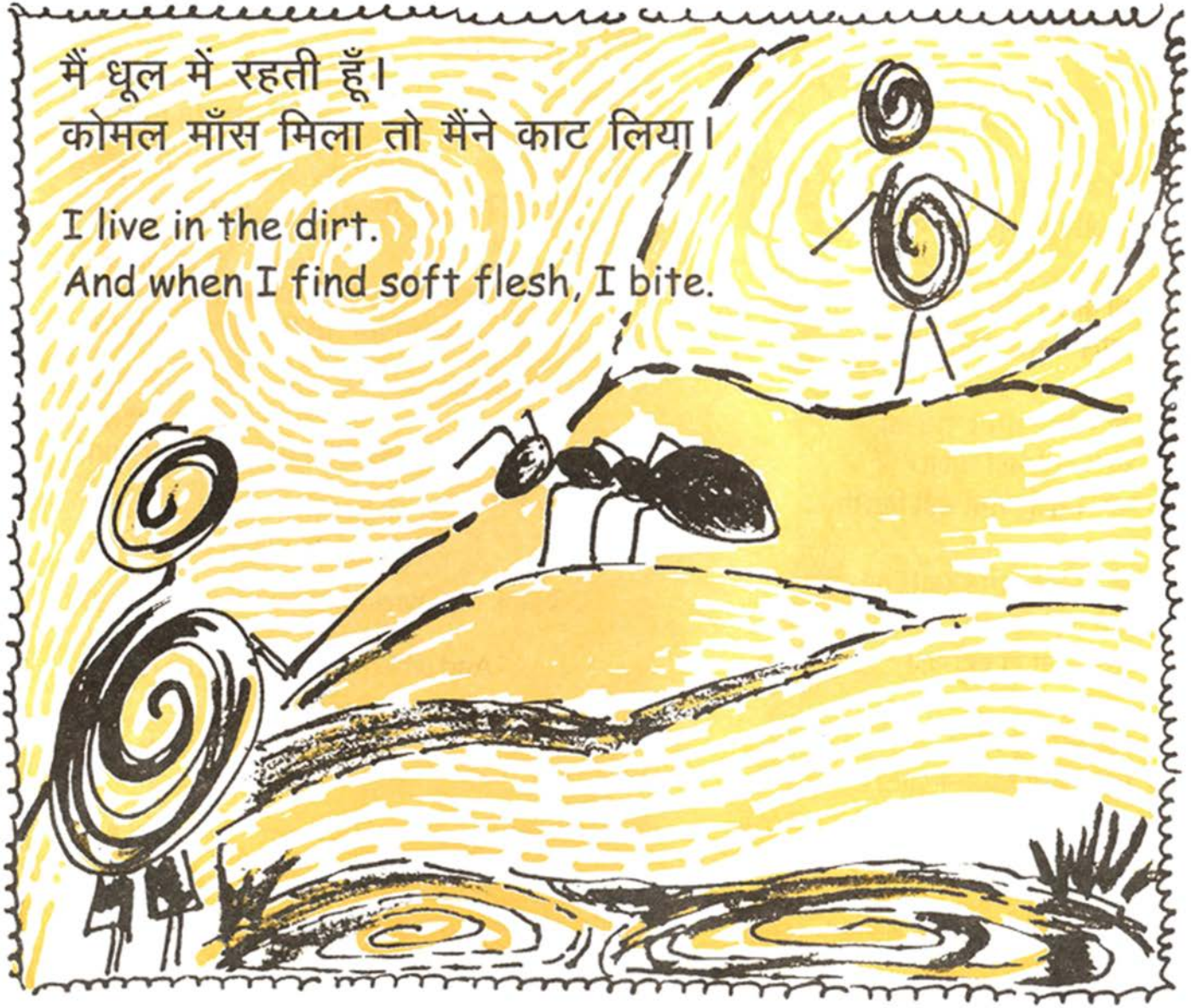
मैं धूल में रहती हूँ।
कोमल माँस मिला तो मैंने काट लिया।
I live in the dirt.
And when I find soft flesh, I bite.

ओ हरियल पेड़, तुम सूख क्यों गए?
काली गाय मुझे खा गई।

ओ काली गाय, तुमने पेड़ को क्यों खाया?
ग्वाले ने मुझे चारा नहीं डाला।

ओ ग्वाले, तुमने गाय को
चारा क्यों नहीं डाला?
बहू ने मुझे खाना नहीं खिलाया।

ओ री बहू, तुमने ग्वाले को खाना
क्यों नहीं खिलाया?
मेरा मुन्ना रो रहा था।

ओ मुन्ने, तुम क्यों रोए?
मुझे काली चींटी ने काटा।

ओ काली चींटी, तुमने मुन्ने को क्यों काटा?
मैं धूल में रहती हूँ।
कोमल माँस मिला तो मैंने काट लिया।

O flowering tree, why did you die?
The black cow ate me up.

O black cow, why did you eat the tree?
The cowherd didn't look after me.

O cowherd,
why didn't you look after the cow?
The daughter-in-law didn't give me food.

O daughter-in-law, why didn't you give
food to the cowherd?
My little baby was crying.

O baby, why did you cry?
The black ant bit me.

O black ant, why did you bite the baby?
I live in the dirt.
And when I find soft flesh, I bite.

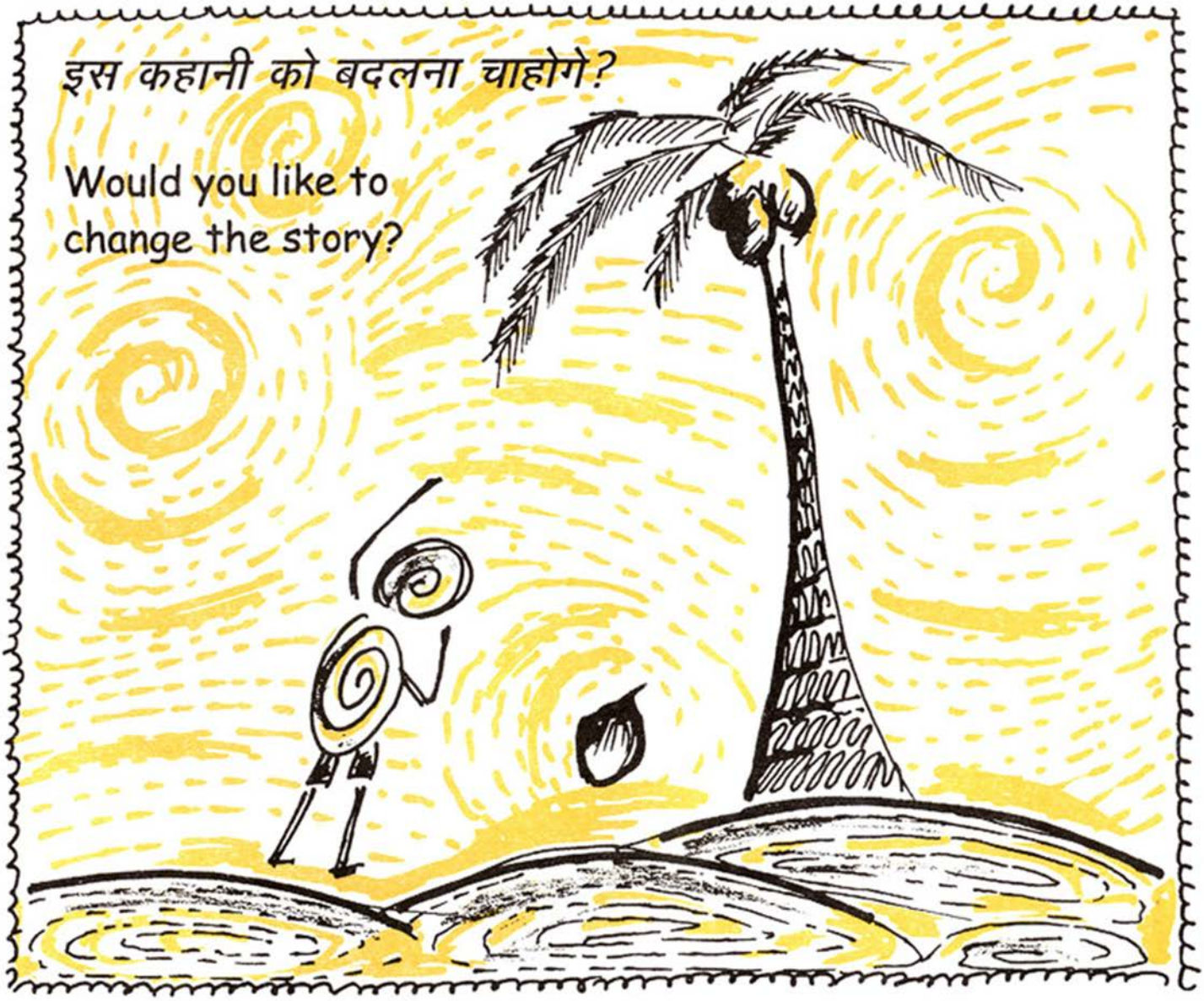
इस कहानी को बदलना चाहोगे?
Would you like to
change the story?

ओ नारियल, तुम गिर क्यों गए?

O coconut, why did you fall?

एकलव्य का परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा का विकास करना जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि जब बच्चों को स्कूली समय से बाहर, घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों, तो स्कूली शिक्षा भी सार्थक हो जाती है। किताबें तथा पत्रिकाएँ ऐसे साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा *संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। एकलव्य ने शिक्षा, जनविज्ञान व बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ तथा सामग्री आदि भी विकसित एवं प्रकाशित की है।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, देवास व शाहपुर (बैतूल) में स्थित केन्द्रों तथा हरदा, उज्जैन, इन्दौर, पिपरिया और परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्यरत है।

ISBN: 978-81-89976-01-9

मूल्य: 22.00 रुपए